श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी महाराज के 350वें प्रकाश उत्सव के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में बिहार के महामहिम राज्यपाल श्री राम नाथ कोविन्द का संबोधन

दिनांक–05.01.2017, स्थान–गांधी मैदान

दशमेश गुरु श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी महाराज के ''350वें प्रकाश–उत्सव'' के उपलक्ष्य में आयोजित आज के ऐतिहासिक आयोजन में उपस्थित भारत के लोकप्रिय प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी, बिहार राज्य के माननीय मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार जी, पंजाब राज्य के माननीय मुख्यमंत्री सरदार प्रकाश सिंह बादल जी, तख्त श्री हरमंदिर साहिब, पटना साहिब के अध्यक्ष श्री अवतार सिंह मक्कर जी, सिक्ख गुरूद्वारा प्रबंधक कमिटी के अध्यक्ष श्री के. एस. बन्दूगर जी, भारत सरकार के मंत्रीगण, बिहार राज्य के मंत्रीगण, बिहार के मुख्य सचिव श्री अंजनी कुमार सिंह, प्रकाश उत्सव में दुनियाँ के विभिन्न देशों तथा भारत के कोने–कोने से आये श्रद्धालुगण, प्यारे बिहारवासियों, देवियों एवं सज्जनों,

गुरू गोबिन्द सिंह जी महाराज की पावन जन्मभूमि बिहार की धरती पर मैं पूरी दुनियाँ से पहुँचनेवाले सभी सिक्ख धर्मावलम्बी भाइयों–बहनों का हार्दिक स्वागत व अभिनन्दन करता हूँ। आज की इस ऐतिहासिक सभा में मैं विश्व के प्रथम गणतंत्र की जननी वैशाली, जो भगवान बुद्ध, भगवान महावीर एवं गुरू गोविन्द सिंह जी की पावन भूमि रही है, मैं भारत के लोकप्रिय प्रधानमंत्री आदरणीय श्री नरेन्द्र मोदी जी का अपनी तथा समस्त बिहारवासियों की ओर से हार्दिक अभिनंदन करता हूँ। बिहार सचमुच बड़ा गौरवशाली राज्य है, जहां गुरू गोविन्द सिंह जैसे महान त्यागी और वीर राष्ट्र नायक ने

जन्म लिया। गुरू गोबिन्द सिंह जी महाराज का जीवन–चरित्र, समस्त व्यक्तित्व और कृतित्व उनके संघर्ष, त्याग, बलिदान और मानवता की सेवा की अनूठी गाथा है। उनकी जीवन–गाथा में एक ओर अगर धर्म, संस्कृति और स्वदेश की रक्षा के लिए पूरे परिवार को न्योछावर करने के दुर्लभतम दृष्टान्त हैं और विदेशी आक्रमण–कारियों के भय से त्रस्त समाज को जगाने वाली प्रबल हुँकार है, तो दूसरी ओर पूरी मानवता, विशेषतः अभिवंचित वर्गों के प्रति ममत्व–परक आत्मीयता भी है।

गुरू गोबिन्द सिंह जी ने भारतीय समाज को एक नई दिशा और दृष्टि प्रदान करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी। परिणाम–स्वरूप, तत्कालीन समाज में चेतना की एक नई धारा का प्रवाह हुआ, जिसने लोगों के जीवन में सांस्कृतिक जागृति लाकर परस्पर जुड़ाव के रंग भर दिये। उन्होंने अपने शिष्यों में यह विश्वास जगाया कि तुम्हारा जन्म ईश्वरीय प्रयोजन की सिद्धि के लिए ही हुआ है और इस प्रयोजन के बारे में उन्होंने दो बातें बतायीं। पहला प्रयोजन उन्होंने आत्म–रक्षा का बताया और दूसरा आत्म–स्वतंत्रता का। गुरूजी के जीवन–चरित्र में हमें वीरता और धीरता के साथ–साथ, विद्या और विनम्रता के भी दर्शन होते हैं। गुरूजी शस्त्र और शास्त्र–दोनों को पूरी निपुणता के साथ साधने वाले अप्रतिम योद्धा और विद्वान महानायक थे। उनके दरबार में 53 कवियों और 32 विद्वानों को ससम्मान नियुक्त कर रखा गया था, जिनके द्वारा रामायण, महाभारत सहित अनेक भारतीय श्रेष्ठ ग्रंथों का अनुवाद कार्य किया जाता था। गुरूजी का मन सबके लिए समान भाव से

खुला रहता था। युद्ध–भूमि में उन्होंने कन्हैया को आदेश दिया कि चाहे कोई हिन्दू हो या मुसलमान, मित्र हो या शत्रु, सबको जल पिलाओ। गुरूजी के हृदय की उदारता उस समय चरम पर दिखती है, जब भाई दया सिंह ने चमकौर युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुए गुरू–पुत्रों अजीत सिंह और जुझार सिंह को, चादर से ढ़ँकने की आज्ञा माँगी, तब गुरूजी ने आदेश दिया कि इनको तभी ढ़ँकना, जब अन्य सभी हुतात्मा वीरों को पहले ढ़ँक दिया जाये। ऐसी दिव्य वीरता और विशाल–हृदयता का उदाहरण भारतीय इतिहास में कहीं दूसरी जगह नही मिलता। गुरूजी के संदेश ही आज भी सिक्ख– समुदाय के मूल–मंत्र बने हुए हैं। आज 'खालसा पंथ' ने पूरे विश्व में जाति, समाज और रंगभेद से ऊपर उठकर अत्याचार एवं आतंक के खिलाफ आवाज बुलंद की है तथा असहायों को पर्याप्त सहायता पहुँचाई है।

यह बिहार का सौभाग्य है कि आज गुरू गोबिन्द सिंह जी महाराज के '350वें प्रकाश पर्व' के सुअवसर पर, केन्द्र सरकार, राज्य सरकार तथा तख्त श्री हरमंदिर साहिब जी, पटना साहिब की प्रबंधक समिति आदि विभिन्न संगठनों ने बिहार पहुँचने वाले सभी सिक्ख धर्मावलम्बियों के आतिथ्य के लिए काफी शानदार और बेहतरीन व्यवस्था का प्रयास किया। अपने मकसद में हम कितने कामयाब हुए यह तो यहां आये श्रद्धालु ही बतायेंगे। हमने अपनी और से पुरजोर कोशिश की है कि आप सभी यहां से जब विदा लें तो इस समारोह की एक मधुर छाप आपके ह्रदय–पटल पर अंकित हो सके। मैं पुनः एक बार माननीय प्रधानमंत्री जी, पंजाब राज्य के मुख्यमंत्री माननीय सरदार प्रकाश सिंह बादल जी, बिहार राज्य के मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार जी, समारोह में उपस्थित सिक्ख एवं अन्य विभिन्न धर्मों के

गुरूजन सबके प्रति हृदय से आभार प्रकट करता हूँ और यह मंगलकामना करता हूँ कि गुरू गोविन्द सिंह जी महाराज की असीम कृपा संपूर्ण भारतवर्ष और पूरे विश्व पर बनी रहे।

आप सबको नववर्ष की शुभकामनाएं और बिहार की धरती पर पधारने हेतु बहुत–बहुत धन्यवाद।

जय हिन्द!!

***

प्रस्तुति–जन–सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना।